– डॉ. गणशेटवार साईनाथ नागनाथ

‘मन्नेरवारलू’ – आदिवासी किसानों का कृषि जीवन और समस्याएँ

भारत एक ऐसा देश है जिसकी अर्थव्यवस्था मुख्यत: कृषि उत्पादन पर आधारित है । आज भी कुल आबादी में से 70 प्रतिशत हिस्सा कृषि एवं उससे संबधित कार्य पर जीवन–यापन करती हैं । कृषि से संबधित किसान मुख्यत: भारत के उस हिस्से में निवास करते हैं जिसे ग्रामीण, अंचल, गाँव, कस्बा, देहात आदि कहते है । उनके इस निवास स्थान का शहरी सभ्यता के साथ तुलना की जाए तो उनका जीवन काफी पिछड़ा हुआ एवं अविकसित पाया जाता है । लेकिन जब बात धर्म, संस्कृति, परम्परा, रीति–रिवाज की आती है तब यही लोग (जिन्हें देहाती कहा जाता है) जो हमारी महान प्राचीनतम् भारतीय आदिम् संस्कृति की कास पकड़कर जीवन–यापन करते हुए उसे जीवित रखने का महान अमूल्य कार्य करते दिखाई देते हैं । भारत की इतनी बड़ी जनसंख्या कृषि पर निर्भर होने के बावजूद इस देश के किसानों एवं गाँवों की स्थिति आज के आधुनिक जीवन में जिन स्थितियों में होनी चाहिए उस अवस्था में नहीं पायी जाती ।

महाराष्ट्र के ‘मन्नेरवारलू’ आदिवासी समुदाय के लोग भी कृषि पर आधारित जीवन व्यतीत करते हैं । इन मन्नेरवारलू समुदाय का मुख्य व्यवसाय कृषि है । इस समुदाय को ‘मुन्नुरकापु’ समुदाय के नाम से भी जाना जाता है । इसे घुमक्कड़ जनजाति भी कहा जाता था । लेकीन आज एक जगह स्थायीक हो गया है । मुन्नुरकापू दो शब्द मिलकर बना है – ‘मुन्नुरू’ और ‘कापु’ ‘मुन्नुरू’ का अर्थ है ‘तीन सौ’ और ‘कापु’ का अर्थ है ‘कृषि करने वाले’ यानी कृषि करने वाले तीन सौ लोगों का एक समुदाय । लेकिन समय के प्रवाह के साथ आज के स्थिति में मन्नेरवारलु आदिवासी समुदाय का मुन्नुरूकापु शब्द का अपभ्रंश से होते हुए मुन्नुरूवार, मन्नेरवार, मन्नुरोल्लू, से मन्नेरवारलू नाम में परिवर्तित हो गया । मन्नेरवारलू समुदाय महाराष्ट्र के इतर जनजाति गोंड, भिल्ल, वारली, कोलाम, महादेव कोली आदि जनजाति जैसी ही एक जनजाति है । यह समुदाय घुमक्कड़ होने की वजह से महाराष्ट्र के कोने–कोने में फैली हुई है जैसे नांदेड, परभणी, जालना, औरंगाबाद, बीड, उस्मानाबाद, लातुर, हिगोंली, अकोला, अमरावती, भंडारा, चद्रपुर, नागपुर, पुणे, मुंबई आदि जिलों के जंगल और पहाड़ों में । मन्नेरवारलू आदिवासी समुदाय के लोग दो प्रकार की कृषि करते हैं । जैसे एक स्थलातर रूप में और दूसरी स्थायी रूप में । यानी पहला जो स्थलातर है वह प्राचीन काल से करते हुए आ रही परम्परा है, जैसे प्राचीन लोग पहले किसी जगह एक दो साल खेती करते थे, वहाँ उत्पादन कम होने से अपने पूरे

परिवार सहित दूसरी जगह जाकर अपना निवास स्थान बनाते थे और वहाँ की जमीन पर खेती का काम नये सिरे से शुरू करते थे । दूसरा प्रकार एक ही जगह स्थायी रूप से रहकर खेती करना था । इनके मुख्य फ़सल धान, कपास, गेहूँ, सरसों, मूँगफली, तिल और रबी में ज्वार, चन्ना आदि होते थे ।

लेकिन आज इस भूमण्डलीकरण के दौर में नये यांत्रिक उपकरण और औद्योगिकरण के कारण आज जंगलों एवं पहाड़ो में रह रही आदिम जनजातियों ने खुले मैदानों तथा सभ्यता के केद्रों में बसे लोगों से संपर्क किये बिना ही अपने अस्तित्व को खतरा में डालने की स्थिती बनाए रखा है । क्योंकि औद्योगिक सभ्यता का विकास संपूर्ण जनजातीय संस्कृति को पूरी तरह नष्ट करता आ रहा है । जब से तथाकथित आधुनिक सभ्यता के ध्वजावाहकों ने उनके समाज में घुसपैंठ की है; वे तब से अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते चले आ रहे हैं । आदिवासी जीवन – संस्कृति, दर्शन एवं पारंपारिक मूल्य उत्तर पूँजीवादी युग में बिखराव के कगार पर है और कृषि व्यवसाय करने वाले लोग बहुत सी समस्याओं का सामना करते आ रहे हैं । लेकिन आज भी ग्रामीण जीवन बिताने वाले किसान इस औद्योगिकरण के आकर्षण के वजह से अपने मुख्य व्यवसाय को छोड़ने के कगार पर आ गये हैं । इसके साथ–साथ अनेक समस्याए है जैसे आर्थिक स्थिति, नैसर्गिक आपत्ति (बाढ़, अकाल, तुफान), शिक्षा, बाजारवाद सरकारी योजनाए आदि ।

मन्नेरवारलू समाज में किसानों की आर्थिक स्थिति को अगर देखा जाये तो सचमुच कृषक अपना पारिवारिक गुजारा करने में भी कभी–कभी असमर्थ नज़र आते हैं । उनकी यह हालात होने की बहुत सारी समस्याएँ हैं । आज समाज के बहुत सारे किसान, महाजन, साहूकार,कुछ बड़े जमींदार, सरकारी एवं निम् सरकारी बैंकों के कर्ज तले दबकर जिन्दगी का गुजारा कर रहे हैं । असंतुलित बाजार किसान के कृषि के उत्पादन को निर्धारित मूल्य ना देकर बड़े–बड़े व्यापारी, दलाल, बिचौलिए और कृषि बाजार समितियों के हाथों शोषण के शिकार हो रहे हैं । बैंक भी किसानों को कर्ज उपलब्ध कराने के लिए उनकी जमीन गिरवी रखवाती है ।

भारत में आज भी कृषि शिक्षण की कमियाँ दिखाई देती हैं। कृषि संस्थाएँ किसानों को कृषि तकनिकी और आधुनिक तंत्रज्ञान तथा नये नये विकसित हुए संकर (हाइब्रिड) सीडस् की जानकारी किसानों को सही तरीके से नहीं देपा रही है । कृषि शिक्षण की कमियोंके कारण कृषि उत्पादन के विकास में रूकावट सी आ जाती है । आधुनिक कृषि ज्ञान आज के किसान के विकास के लिए लाभदायक हैं ।

आधुनिक यंत्रण – आज के इस आधुनिक दुनिया में बाजारवाद ने हंगामा मचा रखा है । अपने नये शोध से नया–नया यंत्रों का आविष्कार करते आ रहा है और उससे उन पुंजीवादी लोगों का पुंजी तो बढ़ रहा है लेकीन

गरीब किसानों के सामने समस्या ला कर कड़ा कर दिया है । जैसे आज आदिवासी किसान हो या आम किसान नये–नये यंत्रों का अपने खेतों में इस्तेमाल करना चाहता है लेकिन उस यंत्रों को खरीदने के लिए इन लोगों के पास न धन है न इतना यंत्रों से कृषि करने के लिए जमीन है । यह किसान की बहुत बढ़ी समस्या है । क्योंकि नये–नये यंत्रों को इस्तेमाल करने से फसलों का उत्पाद में बढ़ती मिलती है लेकिन यह गरीब किसान और आदिवासी किसान के लिए मुश्किल की बात है । इसके साथ–साथ आर्थिक प्रगति भी दिखाई देती है लेकिन आदिवासी लोगों के सामने पैसों की समस्या आती है । यह लोग यात्रिंक यंत्रों का इस्तेमाल बहुत कम करते है ।

बदलता जीवन – आज के वैश्विकरण ने मानव का जीवन हाल बेहाल कर के रख दिया है । आज महानगरीय जीवनशैली की बात की जाए तो हम यह देक सकते है कि वातावरण में नैसर्गिकता का लोप होता जा रहा है । नये–नये यंत्रों का निर्माण के कारण हर एक किसान खेती करने का पद्धती बदल रहा है । क्योंकि आज के समय के अनुसार उनके विचार, सपने बदल रहे हैं । जैसे गोदान में किसान होरी का सपना था अपने घर के सामने एक गाय रखना, क्योंकी अपने गाँव वालों के नज़र में अपनी इज्ज़त बढ़ाना चाहता था । लेकिन आज के वैश्वीकरण समय के किसान का सपना है अपने घर के सामने टैक्टर, कार, सुमों आदि चीज रखना चाहता है । इन दोनों के विचार एक ही है लेकिन समय के साथ–साथ उनके सपनो के साधन बदले हैं । फिर भी दोनों का सपना तो पुरा होता है लेकिन कुछ दिन तक ही, उसके बाद दोनों कर्ज बाजारी हो जाते हैं । पहले लोग साहूकार और जमींदार के पास से पैसा लाते थे लेकिन आज के किसान न साहूकार न जमींदीर सिर्फ सरकार के बैंक से व्याज से पैसा लाते है । उस समय पुरा साल मेहनत करके पुरा फसल साहूकार, ठेकेदार के घर पर देना पड़ता था और आज अपना मेहनत का फल को पुरा बैंकों में जमा करना पड़ता है । मन्नेरवारलू आदिवासी समुदाय भी इसी प्रकार के कर्ज पीड़ा का जीवन जी रहा है । इस बदलता जीवन के बारे में इलेगाव के नागलिंगम वय 74 कहते है कि – “हमारे घर में दादा–परदादा समय से खेती करते थे । मैं भी बचपन से खेती करता था और कर रहा हूँ । जैसे पहले खेती करने का पद्धति और आज की खेती करने के पद्धति में बहुत अंतर है । आधुनिक यंत्र आने के कारण खेती का काम करना बहुत इजी हुआ है । लेकिन उत्पादन घट गया है । आधुनिक यंत्र हमारे पांरपारिक अवजारों और हमारे पशु को धीरे–धीरे निगल रहा है । इसके साथ–साथ गाव में रोजगार खत्म होने के कगार पर है । व्यक्ति इन मशीने आने के बाद कामचोर बन रहा है । खास करके जमीन का उर्जा भी खत्म हो रहा है । इस तरह इन आधुनिक यंत्रों के कारण अनेक समस्याएँ आ रहे है । इस लिए जीवन भी बदल रहा है ।”1 इसी तरह कोडंलवाडी के राजेन्ना वय 58 कहते है कि – “मैं किसान परिवार से हूँ । मैं खेती कर रहा हूँ । हमारे नाना, नानी, दादा, दादी और माँ पिता सभी लोग खेती करते थे । लेकिन उस समय जो फसल हम लेते थे । वें आज इस बदलता जीवन में आधुनिक यंत्र को वजह से नहीं ले पा रहे हैं । हम लोग पहले

मुग, उडीद, ज्वार, चना, कफास, खरडी, अरंडी, धान, पुंटलु आदि फसल का उत्पादन लेते थे । लेकिन आजकल लोग सिर्फ सोयाबीन ले रहे है । उसे ट्रक्टर से बो रहे हैं । उसके बाद एक बार दवा डालना और फवारणी करना । अंतिम यंत्र मशीन से उसे काटना आदा जमीन में आदा मशीन में बचा हुआ किसान को मिलता है । इससे जमीन का नुकसान ज्यादा होता है । और फसल का उत्पादन भी कम होता है । लोग कामचोर भी हो रहे है । इसलिए मैं तो कहता हू की आधुनिक यंत्रों से खेती करना बहुत खतरनाक है ।”2

आज इस समुदाय का किसान आधुनिक पद्धति से खेती करना चाहता है लेकिन इनके पास उतना पैसा नहीं जो आधुनिक पद्धति का खेती करे । धीरे–धीरे इस आधुनिक पद्धति के कारण वें लोग अपने घर पर जो बैल, गाय आदि पशुपालन करते थे । वे अभी नहीं कर पा रहे है । इसके साथ–साथ वें लोग अनाज के फसलों को भी बदल दिया है । पहले हर दिन अपने खाने में शामील फसल को बोते थे । लेकिन आज घर में नहीं बाजार में जिस फसल को ज्यादा किमत है । उसका उत्पादन कर रहे है ।

पारिवारिक विघटन – आज मन्नेरवारलू किसानों में पारिवारिक विघटन एक बहुत बड़ी समस्या है । क्योंकि प्राचीन काल से आदिवासी समुदाय में कभी भी अपना परिवार विघटित होते हूए देखा नहीं है । आदिवासियों की सबसे मजबूत स्तंभ है पारिवारीक समूह, वहीं स्तंभ टूट जाए तो इनके लिए बहुत बड़ा चिंताजनक की बात है । क्योंकि समुह इनके लिए हर प्रकार के संकट से रोकने का एक शस्त्र है, क्योंकि जब आदिवासी यह एक समूह रहता है तो बड़े बड़े पहाड़ को भी उकाड़ फैकते हैं । उसी तरह मन्नेरवारलू किसान एक जगह रहने से बहुत अच्छी तरह समूह में खेती करते थे । उससे फ़सल भी बहुत उत्पन्न होता था क्योकी जमीन अधिक थे एवं मेहनत करने वालों की संख्या भी बहुत था । लेकीन जब से यह किसान समुदाय में पारिवारिक विघटन हो रहा है तब से यह बहुत कमजोर होते जा रहे है । क्योंकि इनके साथ–साथ इन लोगों की जमीन काभी विघटन हो रहा है । एक साथ मेहनत करना धीरे–धीरे बंद होता जा रहा है, मेहनत कम होने से उत्पादन भी घट रहें है, क्योंकि तब अपने ही घरके लोग अपना सब कुछ काम करते थे लेकिन आज कल दूसरे लोगों को मजदूरी से काम कर लेना पड़ता है । जितना उत्पादन होता है उसमें कुछ भाग इन मजदूर लोगों को ही देना पड़ता है । इससे कुछ लोग खेती करना छोड़ दिया है ।

प्राकृतिक बाधा – आदिवासी समुदाय के किसानों और अन्य किसानो की और एक बड़ी समस्या है प्राकृतिक बाधा । प्रकृति कहने से ही अपने नज़र के सामने आदिवासियों की छवि आती है । क्योंकि आदिवासियों की मुख्य शस्त्र है जल, जंगल और जमीन यह प्रकृति का ही भाग है । यहीं प्रकृति से उन लोगों को बाधा पहुँचती है तो इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है । क्योंकि आदिवासी इसी प्रकृति को अपना सब कुछ मान कर बैठता है ।

क्योंकि उनकी खेती पुरा इस प्राकृतिक रूप से ही होती थी और उसके पानी के ऊपर ही निर्भर रहता था । लेकिन आज कल इस प्रकृति से ही उनका बहुत कुछ नुकसान हो रहा है । किसानों को प्रकृति से लंबी लड़ाई लड़नी पड़ती है । चूंकी हमारे देश में दो–तिहाई कृषि वर्षा और मानसुन पर आधारित है इसलिए किसानों को कभी सूखा तो कभी बाद की स्थिति झेलनी पड़ती है । सुखा होने पर फसल सूख जाती है तो बाद में फसल बह जाती है, यदि इंद्रदेव कृपालु भी बने रहें तो फसलों को ओला, पाला और तुफान से खतरा, पकी फसलों पर ओले पड़ गए तो सब गुड़–गोबर हो जाता है, दाने खेतों में ही झड़ जाते है, समय पर धूप न निकला तो फसलों पर कीटाणों का प्रकोप हो जाता है, और कभी कभी बारीश ज्यादा होने से कुछ फसलों पर लाल रंग चढ़कर पुरा नष्ट हो जाता है । इससे किसानों की बहुत कुछ नुकसान होता है ।

बाजारवाद – बाजारवाद के कारण किसानों ने अपनी पारंपारिक विधि से खेती करना छोड़ दिया, वो बाजारवाद के चक्रव्यूह में फंसते चले गए । आज का किसान पूरी तरह से बाज़ार पर निर्भर हो गया है । उद्योगों ने हमारी ग्रामीण व्यवस्था को चौपट कर दिया है । अब हर एक किसान बीज से लेकर खाद तक बाजार पर निर्भर हो गया है । जिस कारण उसकी आत्म–निर्भरता खत्म हो गयी है । पहले ग्रामीण लोग जैविक खेती करते थे । खुद अपने घर पे हर तरीके का बीज से लेकर खाद तक खुद तैयार करथे थे । आजकल परंपरागत बीजों की जगह बहुदेशीय कंपनियों द्वारा आयातित बीज और रासायनिक खादों के इस्तेमाल किया जा रहा है, कीटनाशकों के बड़े पैमाने पर इस्तेमाल हो रहा है । यह एक वास्तविकता है कि नए किस्म के बीजों और रासायनिक खादों, खासकर यूरिया के प्रयोग से उपज बढ़ी । लेकिन खेती बेहद महंगी हो गई । देश के बड़े भू–भाग में धान की खेती होती है । अपने देश में धान के बीजों के विविध प्रकार थे । किसान फसल का एक हिस्सा बोहने के लिए बचा कर रखता था । लेकिन बाजार में उपलब्ध बीजों का प्रचलन होते ही पुराने बीजों का प्रचलन खत्म हो गया । देशी बीज गोबर की खाद और अपेक्षाकृत कम पानी में भी फसल देते थे जबकि बाजार के बीजों के लिए रासायनिक खाद, भरपूर पानी और कीटनाशक जरूरी है । परिणाम यह हुआ कि उपज तो बढ़ी, लेकिन बाजार पर निर्भरता भी हुआ इसके साथ–साथ नगदी फसलों का प्रचलन बढ़ा । दलहन की खेती कम होने लगी । बहुत सारी ऐसी फसलें जो प्रतिकूल मौसम में भी पैदा हो जाती हैं और चावल, गेहूं जैसे अनाजों का विकल्प बनती हैं, उनका उत्पादन बेहद कम हो गया । गन्ना, कपास जैसी नगदी फसलों की खेती की तरफ किसानों का झुकाव हुआ । जैसे धान, दाल आदि का कीमत पहले बहुत कम यानी 10–20 रुपये किलो में मिलता था लेकीन आज कल वहीं धान, दाल 300 रुपये हो गया । यह सब बाजारवाद का प्रभाव है इससे किसान इन फसलों का खेती करना छोड़ दिया । और जो फसल ज्यादा बाजार में पैसा देता है । उसका खेती कर रहे हैं । इससे उनके उत्पादन में बहुत घट होते हुए दिखाई देता है ।

आधार ग्रंथ सहायक सूची

1. नागलिंगम रा. इलेगाम – वय 74, मुलाखत 15 सप्टेबर 2019
2. राजेन्ना रा. कोडंलवाडी – वय 58, मुलाखत 04 सप्टेबर 2019
3. महाराष्ट्रातील आदिवासी जमात – डॉ. गोविंद गारे
4. युद्धरत आम आदमी – संपा – रमणिका गुप्ता
5. आदिवासी सत्ता – संपा – आर के शहा

सहायक प्राध्यापक - हिन्दी विभाग, क्रिस्तु जयंती महाविद्यालय (स्वायत्त)
बेंगलूरू, कर्नाटक – 560077
फोन : 7598438956, ganshetwar@kristujayanti.com